शालिभद्र

लगभग 2500 वर्ष पहले की यह घटना है। राजगृह के निकट छोटे से गाँव में एक विधवा ग्वालिन अपने पुत्र के साथ रहती थी। एक दिन सुबह के समय—

गाय चराते-चराते दो पहर बीत गये। संगम एक वृक्ष की छाया में विश्राम करने लगा। तभी दूसरा चरवाह भी आ गया। संगम ने कहा—

पूरण ने भी अपना झोला निकाला—

भौंदूराम, खीर बहुत मीठी होती है। ले, चख जरा।

संगम ने खीर चखी—
अरे वाह! यह तो बड़ी अच्छी है, बड़ी स्वादिष्ट है। कल मैं भी अपनी माँ से कहकर खीर बनवाऊँगा।

साँझ होते-होते संगम गायें लेकर लौट आया। घर आकर माँ से बोला—
अम्मा! तुमने कभी खीर खाई है?

माँ ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा
बेटा! तेरे बापू थे तब अपने पास भी दस गायें थीं। खूब दूध, दही, घी होता था। रोज खीर बनती थी। तब तू दो वर्ष का था।
बताते-बताते माँ की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे।

माँ के आँसू देखकर संगम भी रुँआसा हो गया। वह भूखा-प्यासा ही माँ की गोद में सो गया। सुबह उठते ही उसने माँ से कहा—
माँ! आज तो मैं खीर खाऊँगा।
बेटा! घर में तो धान के चार दाने भी नहीं हैं। मैं खीर कहाँ से लाऊँ?

माँ! कुछ भी हो, आज खीर खाये बिना मैं गायें चराने नहीं जाऊँगा।

माँ को गुस्सा आ गया। उसने दो-चार चाँटे जमा दिये और झिड़ककर बोली—
जा मर, पड़ा रह।
ऊं... ऊं... ऊं...
संगम जोर-जोर से रोने लगा। पड़ोसिनें आकर बोलीं—
धन्नो ! क्या बात है, संगमा क्यों रो रहा है ?
क्या करूँ, घर में तो आटा नहीं है। यह मुआ कहता है खीर खाऊँगा। कहाँ से लाऊँ ?
तभी दूसरी पड़ोसिन आ गई—
अरी बच्चा है, जिद्द तो पूरी करनी पड़ेगी। ले, चल मैं थोड़ा-सा दूध लायी हूँ।
लो, चावल मैं लाती हूँ।
लो, शक्कर मैं देती हूँ।
पड़ोसिनों ने खीर का सामान लाकर दे दिया। धन्नो ने संगम को मनाया—
देख लल्लू, तेरी तकदीर से भगवान ने खीर का सामान भेज दिया। मैं खीर बनाती हूँ, उठ ! रो मत।
संगम हँसता हुआ उठा। हाथ-मुँह धोकर थाली लेकर बैठ गया। बार-बार चूल्हे पर पकती खीर को देखने लगा—
माँ ! खीर बन गई क्या ? कितनी देर में बनेगी ?
बेटा ! उतावला क्यों होता है। अभी कच्ची है।
अरे, चल मुझे परोस दे। जैसी है वैसी ही खा लूँगा। देर मत कर।